

[SMT. MIRA DAS]

There is seepage on the body of the Temple. There is no coordination between the organisations which are providing the chemical* for the repair and the preservation of the Temple premises. The State Government has nothing to do with the preservation of the Temple as a temple Structure. But the State Government, under the leadership of Shri Biju Patnaik, is almost prepared to provide necessary help and co-operation to the Archaeological Survey of India.

On the 29th November, three deities of Jagannath, Balabhadra and Subhadra have been shifted to a different place inside the Temple for facilitating the repair work. I urge upon the Minister of Human Resource Development to ensure that the repair work is finished within the specified time-limit. I hope the Indian Archaeological Department will take the opinion of experts and also the opinion of eminent archaeologists before staffing the repair work of the Temple. Thank you.

श्री महेश्वर सिंह (हिमाचल प्रदेश) :
उपसमाध्यक्ष जी, मैं इसका समर्थन करता हूँ।

Discontentment among youth due to deletion of Arabic, Persian and Pali Languages from Optional Subject? for Civil Services (Mam) Examination

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश) : मुकिया वाइस चेंबरमैन साहब, मैं सबसे पहले वाइस चेंबरमैन की हैसियत से कुरसी हकदारत पर आपके इंतज़ाब के लिए आपको मुबारकबाद पेश करता हूँ और उसके बाद आपकी इस हुकूमते हिंद का ध्यान यूनिवर्स पब्लिक सर्विस कमिशन की तरफ से अरबी, फ़ारसी और पाली जुबानों के साथ होने वाली नाइंसाफी की तरफ़ मबजूल कराना चाहता हूँ।

मोहतरम वाइस चेंबरमैन साहब, यूनिवर्स पब्लिक सर्विस कमिशन में धुसे हुए फिरकापरस्त और आला मोहदेदारान/अकस्मिकत दुश्मन अनासिर ने अरबी, फ़ारसी और पाली को इंतज़ानात के

अख्तियारी मजामीन की फेहरिस्त से खारिज करने का काम करके इन तीनों जुबानों से अपनी बंदी जेहनियत का सबूत दिया है और यह सारा कारोबार हिंदुस्तान की धरती पर मुस्लिम तहजीबी और सफ़ाफ़ती मिशानियों को जड़ से उखाड़ने की ख्वाइश रखने वाले अपने आकाशों के इशारों पर नाश्ते हुए मुल्क में फिरकापरस्ती का जहर फैलाने वालों का होखला बढ़ाने की एक नापाक कोशिश की है ताकि हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने मुल्क की तरक्की और अपनी खुशहाली का काम करने के बजाय निषली सतह के मसाइत ही में उलझें रहें। मैं बहुत सफ़ायी के साथ हुकूमते हिंद से कहना चाहूंगा कि अगर वजीरे आजम, वजीरे दाखिला, वजीरे तालीम और वजीरे फलाहोब्रह्म और हुकूमते हिंद के दूसरे जिम्मेदारों ने फ़ौरी तौर पर इस तरफ़ तबज्जो देकर फिरकापरस्ती की हज़ साजिश को नाकाम नहीं बनाया तो पूरे मुल्क में इस तरह वह बेचैनी का एक तूफ़ान खड़ा होगा जिससे मुल्क की जम्हूरियत और हुकूमते हिंद के सेकुलर के किरदार पर भी एक सवालिया निशान लग जाएगा।

मोहतरम वाइस-चेंबरमैन साहब, यूनिवर्स पब्लिक सर्विस कमिशन की धांधली और नाइंसाफी की फोलपट्टी डा० सतीश चन्द्रा कमेटी की रिपोर्ट से खुल जाती है। चूंकि मुल्क में यह मसला एक हैरानी और तूफ़ानी बन गया है, इस लिए मैं हाऊस के जरिए इस मसले पर हुकूमतेहिन्द से भरपूर इंसानाफ़ चाहता हूँ। यूनिवर्स पब्लिक सर्विस कमिशन ने अगस्त, 1988 में सिविल सर्विसेज के इम्तिहान की स्कीम का जायजा लेने के लिए यूनिवर्सिटी ग्रांट्स के साबिक चेंबरमैन डा० सतीश चन्द्रा के तहत एक चुसुसी कमेटी की तसदील की थी। कमेटी ने अपनी रिपोर्ट भी हुकूमते-हिन्द को बाव

में पेश कर दी, लेकिन तीन साल का अरसा गुजर जाने के बाद यूनियन पब्लिक सर्विस कमिशन ने इस बात की जरूरत महसूस की कि इसके करारदातों के सिलसिले में लाजमी तौर पर कोई फैसला लिया जाए। मजकूर बांसा फैसला जो अरबी, परसियन और पाली जुबानों को अख्तियारी मजमून की हैसियत से खारिज कर देने का है। यह इसी कमेटी के फैसले की रोशनी में किया गया। मगर, सदरे मोहतरम, इस सिलसिले में दिक्कत यह है कि डा. चन्द्रा कमेटी में 6 रहने की कमेटी बनी थी, जिसके 6 मेम्बरन थे। यूनियन पब्लिक सर्विस कमिशन ने हालिया फैसले पर अपनी बेइतमिनी का इन्हें ज्ञात किया है। उन मेम्बरन में टी ओ सतीश चन्द्रा एस. एन. मथुर, डा. के. वैक्टरमैय, डा. फ्रांसिस एम. एम. सर, सी. एम. स्वामीयन और डी. पी. पाजी पेश-पेश हैं। इस कमेटी के चेयरमैन डा. सतीश चन्द्रा और सेक्रेटरी बी. सी. होता हैं। इन अरकाने कमेटी ने एहतजाज करते हुए यह कहा है, इनकी कमेटी ने सिर्फ चार गैर-मुल्की जुबानों फ्रांसीसी, जर्मनी, रूसी और चीनी जुबानों को खारिज करने की सिफारिश की थी क्योंकि सिविल सर्विसेज के इम्तिहान में इन चार जुबानों में बहुत कम तलबा पाए जाते हैं, लेकिन हुकूमत ने अरबी, फारसी और पाली को भी इसमें शामिल कर लिया।

मोहतरम बाइस-चेयरमैन साहब, मैं यह अर्ज करना चाहता हूँ कि एक कमेटी सभी जुबानों का सर्वे करने के लिए और जुबानों का सर्वे करके जब उस कमेटी ने हुकूमत को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी कि चार जुबानों को गैर-मुल्की हैसियत से खारिज कर दिया जाए, उन जुबानों में तलबा ही बहुत कम है। तो उन चार जुबानों के लिए तो रिक्वेस्ट की थी, मगर तीन जुबानों को फिरकापरस्तों ने और

एड करके हिन्दुस्तान की सफाई, हिन्दुस्तान की तहजीब, हिन्दुस्तान के तमदुम और हिन्दुस्तान की तारीखी-बरासत का बर्बाद भयंकर खून किया। कमेटी के अरकान का यह कहना है कि अरबी, फारसी और पाली, यह हमारे मुल्क की अहम जुबानें हैं और मुल्क की तहजीब का अंशोला है, इसलिए इन्हें गैर-मुल्की जुबानों के साथ हरगिज नहीं जोड़ा जा सकता। अरकाने कमेटी का यह भी कहना है कि अगर कोई तलब की बुनियाद पर संस्कृत को बर्करार रखा जा सकता है तो फिर कोई बाह नहीं है कि अरबी, फारसी और पाली को इतना मुल्क में लाजमी इदारी का बंद कर दिया जाए।

मोहतरम बाइस-चेयरमैन साहब, मैं अर्ज यह करना चाहता हूँ कि एक कमेटी बनाई गई कि वह जुबानों का जायजा ले। उस कमेटी ने जुबानों का जायजा लेकर चार जुबानों को खारिज करने का मुतलबा किया, मगर कमेटी के इस मुतलब के बाद तीन जुबानों को अपनी तरफ से एड करके खारिज किया गया। मैं पूछना चाहता हूँ कि इस तरह की धांधली और बेइमानी करके क्या हिन्दुस्तान में रहने वाली माइनों-रिटी की तहजीबों तमदुम गारत करने की बहानाफाक साजिश नहीं है? अरबी और फारसी का हिन्दुस्तान की आजादी से कितना गहरा ताल्लुक, मोहतरम बाइस-चेयरमैन साहब, रहा है? इसे आप भी जानते हैं और हिन्दुस्तान का हर पढ़ा-लिखा इंसान अच्छी तरह से जानता है। रेशमी खमाल तहरीक रही हो या ब्राकसोर तहरीक रही हो या खुदाई खिबमतगार तहरीक रही हो या हिन्दुस्तान में भजसिंह एहरार तहरीक रही हो या खिलाफत कमेटी तहरीक रही हो या मोलाना अबुल कलाम आजाद की बायरेक्ट कांफ्रेंस कमेटी तहरीक रही हो, हिन्दुस्तान की आजादी के सिलसिले में इन तमाम तरजमाओं ने

[मौलाना अबुलकलाम खाज आज़मी]

अपना खूने-जिगर बड़ाकर भारत की मांग में आजादी का सिन्दूर रचा और बसा दिया। मैं कहना यह चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान सरजमीं पर कितने ही वर्ष तक कमोवेश फारसी का चलन रहा है, आज भी हमारी अदालतों में फारसी जुबान की परंपरा जारी सारी है। अरबिक के यूनिवर्सल प्रोग्रामात, अरबिक मजामीन, इलाहाबाद बोर्ड से आलिम और फाजिल के अरबिक के सर्टिफिकेट, हिन्दुस्तान में करोड़ों-करोड़ों मुसलमान अरबी पढ़ते हैं, अरबी में उसका मजहब, अरबी में उसकी मजहबी किताब, अरबी में उसकी इबादत, अरबी में उसकी नमाज-रोजा, अरबी में उसके हज और जकात, इन तमाम तरतहजीबी रिवायतों को पारस करने की यह तहरीक चलाई जा रही है। जिसके खिलाफ मैं जवर्दस्त मजहमत करते हुए हुकूमते-हिन्द से बिभांड करता हूँ कि अरबी, फारसी और पाली, जो कतई इस मुल्क की जुबानें बन गई हैं और इन जुबानों का भरपूर हिस्सा रहा है इस मुल्क की तरबीज-ओ-तरक्की में, उन जुबानों को इन इस्तहानात् में शामिल किया जाए और कमेटी के इन तमामतर वाजिब, जायज मुतालबात को पूरा किया जाए जिसमें खुद कमेटी के अरकान ने इन जुबानों को हिन्दुस्तानी जुबान से ताबीर किया है। आज हिन्दुस्तान में करोड़ों रुपए की लाइब्रेरी अरबी की है, परशियन की है। इन जुबानों की ये लाइब्रेरियां खत्म हो जाएंगी, बेमकसद हो जाएंगी, जब इन जुबानों के जरिए इम्ताहन में तलबा को नहीं बैठने नहीं दिया जाएगा। पूरे हिन्दुस्तान का कमोवेश में दौरा करता हूँ, मुझे हर जगह मुसलमानों में खुसूसियत के साथ बेचैनी और इस्तराब की लहरें देखने को मिली हैं, जगह-जगह लोगों में इसके खिलाफ गहरी तशवीश जाहिर की गई है। इसलिए मैं इस हाउस में अपनी इस जुबान के

तहफूस के लिए हुकूमते-हिन्द और हाउस का ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

सर, एक बात मैं और कहना चाहूंगा कि आज परशियन में आमिर सुभानी, जिसने कि आज इब्दिया आई. ए. एस. टॉप किया था, आमिर सुभानी का भी यही मजमून था। 90 यूनिवर्सिटियां हैं हिन्दुस्तान में जिनमें यह परशियन पढ़ी और लिखी जा रही है, पढ़ाई जा रही है। अरबी, दुनिया के बेशतर भुमालिक में सरकारी जुबान है। हमारे मुल्क का अरबी जुबान से कितना ताल्लुक है। आज लाखों वर्कर हमारे हिन्दुस्तान का अरब भुमालिक में जाकर रुपया कमाता है और हिन्दुस्तान को फारेन एक्सचेंज देता है। अरबी न जानने की बिना पर उसकी तनख्वाह में भी कटौती होती है, उसके आमदनी के जराए भी बंद हो जाते हैं, मगर इस जुबान के हासिल करने के बाद वह हिन्दुस्तान के फरोग का सामान बनत है। पांच नव-आजाद जम्हूरियाओं में, रशिया में जो हुकूमतें कायम हुई हैं, उनमें भी उन पांचों हुकूमतों की सरकारी जुबान फारसी है, ईरान की भी सरकारी जुबान फारसी है। इन जुबानों के साथ पिछले दौर में हमारा कितना गहरा ताल्लुक रहा है, हम इस बात को जानते हैं। सदरे जम्हूरिया अरबी में भी लोगों को इनाम देने के लिए, परशियन में भी लोगों को इनाम देते हैं। इन तमाम चीजों को मद्देनजर रखते हुए फारसी के तलबा की भी कमी नहीं है, अरबी के स्टूडेंट्स की भी कमी नहीं है। अब जरा मसलमानों में जब थोड़ी तालीमी बेदारी आई है, तो तालीमी बेदारी का यह चिनौना मज्जाक किया जा रहा है। जिस रास्ते से मुसलमान तरक्की करने की कोशिश करता है, वह रास्ता उस पर

जान-बूझकर के बंद कर दिया जाता है। तो खुदा के लिए, एक तरफ तो यह इस्लाम लगाते हैं हुकूमत के अरकान, एक तरफ हमसे कहा जाता है कि मुसलमान पढ़ता-लिखता नहीं है और जब मुसलमान पढ़ने-लिखने की राह पर लग जाता है तो पढ़ने-लिखने के रास्ते काट दिए जाते हैं, उसकी तरक्की का दरवाजा बंद कर दिया जाता है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि ये जुवानें हमेशा हमारे मुल्क की शान, आन, बान रही हैं। हमारे मुल्क की विरासत के साथ, हमारे मुल्क की तहजीब-ओ-तमददुन के साथ इन जुवानों का सीधा रिश्ता है। इसलिए इन जुवानों को यूनिफन पब्लिक सर्विस कमीशन की गाइसाफियों के खिलाफ फिर से वह दर्जा मिलना चाहिए, जिसके जरिए बच्चे सिविल सर्विस के इम्तहानात में बैठते थे। साथ-साथ एक बात और अर्ज करूंगा।...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): Please try to conclude. There are two or three Members who want to associate with your special mention. Kindly bear their interest also in your mind.

मौलाना अबुबुल्ला खान धाकनी : बिल्कुल आखिरी बात कहना चाहता हूँ। एक सेकिंड का मोका और चाहता हूँ सर। मैं कहना यह चाहता हूँ कि हर तरफ ही यह तमाशा हो रहा है। मुल्क से अरबी को खत्म कर दो, परशियन को खत्म कर दो। इस हाउस में दर्जन से ज्यादा लोग उर्दू में तकरीरें करते हैं। सिकन्दर बख्त साहब की भी जुबान निहायत शानवार और हमेशा उर्दू-ए-मुअल्ला को बे इस्तेमाल करते हैं। इस हाउस में पी० शिवशंकर के जरिए और सर, आप भी रहे होंगे, दूसरे मेम्बरान-ए-पार्लियामेंट के जरिए

हमने अपने साबिक चेयरमैन के सामने भी उर्दू का मसला रखा था कि एक मुतरज्जिम दे दिया जाए, एक इन्टरप्रेटर दे दिया जाए, मगर आज तक ये....

उपसभाध्यक्ष (श्री सय्यद सिबते रज़ी) : यह उर्दू का मसला नहीं है।

मौलाना अबुबुल्ला खान धाकनी : नहीं, मैं कहना यह चाहता हूँ कि जहाँ-जहाँ भी हमारे हुकूम हैं, वहाँ-वहाँ से उनको निकाला जा रहा है। आखिर यह धाकनी कब तक चलती रहेगी ? मैं इस धाकनी के खिलाफ जबरदस्त मजहमत करते हुए अरबी, परशियन और पाली को फिर से उनकी बहाली की मांग करता हूँ ताकि मुल्क में मुसलमानों में और इंसानों में फैली हुई बेबैनी का खारना हो सके। बड़ी भारी मुसीबत तो यह है :—

“नहीं भिन्नतकशे तावे शुनीदम दास्ता मेरी,
खामोशी गुफतगू है, बेजुबानी है, जुबां मेरी
यह दस्तूरे जुबांवदी है कैसा तेरी महफिल में
जहाँ पर बात करने को तरसती है जुबां मेरी
उड़ाए कुछ बरक लाला ने, कुछ गुलामी ने,
कुछ गुल ने चमन में हर तरफ बिखरी हुई
है दास्तां मेरी
मुक्रिया।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی :
اتر پردیش : شکریہ وائس پیپر میں
صاحب میں سب سے پہلے اس جہز میں
کی حیثیت سے کرسی صدارت پر آئیے
انتخاب کے لئے آپ کو مبارکباد پیش
کرتا ہوں اور اس کے بعد آپ نے ریسی
حکومت ہند کا دھیان برائین یہ ملک

[मीलाना बोबदला खान आजमा]

سروس کمیشن کی طرف سے عربی، فارسی، اور پالی زبانوں کے ساتھ ہونے والی نا انصافی کی طرف مہذول کرنا چاہتا ہوں۔ محترم وائس چیمبرمین صاحب یونین پبلک سروس کمیشن میں گھسیٹے ہوئے فرقہ پرست اور اعلیٰ عہدیداران اقلیت دشمن عناصر نے عربی، فارسی اور پالی کو امتحانات کے اختیاری مضامین کی فہرست سے خارج کرنے کا کام کر کے ان تینوں زبانوں سے اپنی گندی ذہنیت کا ثبوت دیا ہے اور یہ سارا کاروبار ہندوستان کی دھرتی پر مسلم تہذیب اور ثقافتی نشانیوں کو بڑے اکھاڑنے کی خواہش رکھنے والے اپنے آقاؤں کے اشاروں پر ناچتے ہوئے ملک میں فرقہ پرستی کا زہر پھیلانے والوں کا حوصلہ بڑھانے کی ایک ناپاک کوشش کے تحت کیا گیا ہے تاکہ ہندوستانی مسلمان اپنے ملک کی ترقی اور اپنی خوشحالی کا کام کرنے کے بجائے نچلی سطح کے مسائل ہی میں الجھے رہیں۔ میں بہت صفاً کے ساتھ حکومت ہند سے کہنا چاہوں گا کہ اگر وزیر اعظم، وزیر داخلہ، وزیر تعلیم اور وزیر فلاح و بہبود اور حکومت ہند کے دوسرے ذمہ داروں نے فوری طور پر اس طرف توجہ دے کر فرقہ پرستی کی اس

سازش کو ناکام نہیں بنایا تو پورے ملک میں زبردست بیچینی کا ایک طوفان کھڑا ہو گا جس سے ملک کی جمہوریت اور حکومت ہند کے سیکولر کردار پر بھی ایک سوالیہ نشان لگ جائے گا۔ محترم وائس چیمبرمین صاحب یونین سروس کمیشن کی دھاندلی اور نا انصافی کی پولیٹی ڈاکٹر ستیش چندرا کمیٹی کی رپورٹ سے کھل جاتی ہے کیونکہ ملک میں یہ مسئلہ ایک سبجائی اور طوفانی بن گیا ہے۔ اس لئے میں باؤس کے ذریعہ اس مسئلہ پر حکومت ہند سے ملے ہوئے انصاف چاہتا ہوں۔ یونین پبلک سروس کمیشن نے اگست ۱۹۸۸ میں سول سروس کے امتحان کی اسکیم کا جائزہ لینے کیلئے یونیورسٹی گرانٹس کے سابق چیمبرمین ڈاکٹر ستیش چندرا کے تحت ایک خصوصی کمیٹی کی تشکیل دی تھی۔ کمیٹی نے اپنی رپورٹ بھی حکومت ہند کو بعد میں پیش کر دی لیکن تین سال کا عرصہ گزر جانے کے بعد یونین پبلک سروس کمیشن نے اس بات کی ضرورت محسوس کی کہ اس کی قراردادوں کے سلسلے میں لازمی طور پر کوئی فیصلہ لیا جائے۔ مذکورہ بالا فیصلہ جو عربی، پشتو اور پالی زبانوں کو عربی

[मौलाना मौजेदुल्ला खान भाख्खी]

مگر کمیٹی کے اس مطالبہ کے بعد تین زبانوں کو اپنی طرف سے ایڈ کر کے خارج کر دیا گیا۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ اس طرح کی دھاندلی اور بے ایمانی کر کے کیا ہندوستان میں رہنے والی مائٹرائٹی کی تہذیب و تمدن کو غارت کرنے کی یہ ناپاک سازش نہیں ہے۔ عربی اور فارسی کا ہندوستان کی آزادی سے کتنا اثر تعلق ہے۔ محترم وائس چیمبرلین اسے آپ بھی جانتے ہیں اور ہندوستان کا ہر بڑا کھانا انسان اچھی طرح سے جانتا ہے۔ ریشمی رومال تحریک رہی ہو یا خاکسار تحریک رہی ہو یا خدائی خدمتگار تحریک رہی یا ہندوستان میں مجلس احرار تحریک رہی ہو یا خلافت کمیٹی تحریک رہی ہو یا مولانا ابوالکلام آزاد کی ڈائریکٹ کانگریس کمیٹی تحریک رہی ہو۔ ہندوستان کی آزادی کے سلسلہ میں ان تمام ترجمانوں نے اپنا خون جگر بڑھا کر بھارت کی مانگ میں آزادی کا سندور رچا اور بسا دیا۔ میں کہنا یہ چاہتا ہوں کہ ہندوستان کی سرزمین پر کتنے زمانے تک کم و بیش فارسی کا چلن رہا ہے۔ آج بھی بھاری عدالتوں میں فارسی زبان کی پریس جاری و ساری ہے۔ عربک کے یونیورسل پروگرامز عربک

مضامین۔ الہ آباد پورٹ سے عالم فاضل کے عربک سٹریٹجیکس۔ یہ سب سہ کارہ طور پر جاری ہوتے ہیں۔ ہندوستان کے کوڑوں کروڑ مسلمان عربی پڑھتے ہیں۔ عربی میں اس کا مذہب۔ عربی میں اس کی مذہب ہی کتاب عربی ہیں اس کی عبارت عربی میں اس کی نماز روزہ عربی ہیں اس کے حج زکوٰۃ۔ ان تمام تہذیبی مذہبی روایتوں کو غارت کرنے کی یہ تحریک چلائی جا رہی ہے۔ جس کے خلاف زبردست مذمت کرتے ہوئے حکومت ہند سے ڈیمانڈ کرتا ہوں کہ عربی فارسی اور پالی جو قطعی اس ملک کی زبانیں ہیں۔ جو قطعی اس ملک کی زبانیں ہیں اور ان زبانوں کا تاریخی آزادی میں بھرپور حصہ رہا ہے۔ لہذا اس ملک کی ترقی و ترقی و ترقی ہیں۔ ان زبانوں کو ان امتحانات میں شامل کیا جائے۔ اور کمیٹی کے ان تمام تر واجب جائز مطالبات کو پورا کیا جائے جس میں خود کمیٹی کے ارکان نے ان زبانوں کو ہندوستانی زبان سے تعبیر کیا ہے۔ آج ہندوستان میں کروڑوں ایسے کی لائبریری عربی کی ہے پرشین کی ہے۔ ان زبانوں کی لائبریری ختم ہو جائے گی۔ بے مقصد ہو جائے گی جب ان زبانوں کے ذریعہ امتحان میں

طلباء کو نہیں بیٹھنے دیا جائے گا۔ پورے
ہندوستان کا کم و بیش میں دورہ کرتا ہوں
مجھے ہر جگہ مسلمانوں میں خصوصیت کے
سابقہ بچپنی اور اضطراب کی لہریں دیکھنے
کو ملی ہیں۔ جگہ جگہ لوگوں میں اس کے
خلافت گہری تشویش ظاہر کی گئی ہے۔
اس لئے میں اس لڑوس میں اپنی اس
زبان کے تحفظ کے لئے حکومت ہند اور
لڑوس کا دھیان دلانا چاہتا ہوں۔

سرد ایک بات میں اور کہنا چاہوں گا
کہ پشین میں عام سبجانی جس نے کہ آل
انڈیا آئی۔ اے۔ ایس۔ ٹاپ کیا تھا عامر
سبجانی کا بھی یہی مضمون تھا۔ ہونیوٹیاں
ہیں ہندوستان میں جن میں پشین پڑھی
اور بھی جا رہی ہے۔ پڑھائی جا رہی ہے
عربی دنیا کے بیشتر ممالک کی سرکاری زبان
ہے۔ ہمارے ملک کا عربی زبان سے کتنا
گہرا تعلق ہے۔ آج لاکھوں ورکمہ ہمارے
ہندوستان کا عرب ممالک میں جا کر روپیہ
کماتا ہے اور ہندوستان کو فارن ایکس چینج
دیتا ہے۔ عربی نہ جاننے کی بنا پر اس کی
تنخواہ میں کٹوتی ہوتی ہے۔ اس کے آمدنی
کے ذرائع بند ہوتے ہیں۔ مگر اس زبان
کو حاصل کرنے کے بعد وہ ہندوستان کے
فروغ کا سامان بنتا ہے۔ پانچ نو آزاد

جمہوریاتوں میں۔ رشتہ میں جو حکومتیں
قائم ہوتی ہیں۔ ان میں ان پانچوں حکومتوں
کی سرکاری زبان فارسی ہے۔ ایران کی بھی
سرکاری زبان فارسی ہے۔ ان زبانوں کے
ساتھ پچھلے دور میں ہمارا کتنا گہرا تعلق
رہا ہے۔ ہم اس بات کو جانتے ہیں صدر
جمہوریہ عربی مضافین میں بھی لوگوں کو
انعام دیتے ہیں۔ پرشین مضافین میں
بھی لوگوں کو انعام دیتے ہیں۔ ان تمام
چیزوں کو مدنظر رکھتے ہوئے فارسی کے
طلباء کی بھی کمی نہیں ہے۔ عربی کے لڑوس
کی بھی کمی نہیں ہے۔ اب ذرا مسلمانوں
میں جب تھوڑی تعلیمی بیداری آئی ہے
تو تعلیمی بیداری کا یہ گھناؤنا مذاق
کیا جا رہا ہے جس راستے سے مسلمان
ترقی کرنے کی کوشش کرتا ہے وہ راستہ
اس پر جان بوجھ کر بند کر دیا جاتا ہے۔
تو خدا کے لئے بتائیے۔ ایک طرف تو یہ
الزام لگاتے ہیں حکومت کے ارکان۔
ایک طرف ہم سے یہ کہا جاتا ہے کہ
مسلمان پڑھتا مکھتا نہیں ہے اور جب
مسلمان پڑھنے لکھنے کی راہ پر لگ جاتا
ہے۔ تو پڑھنے لکھنے کے راستے کاٹ
دیے جاتے ہیں اس کی ترقی کا دروازہ
بند کر دیا جاتا ہے۔ میں کہنا یہ چاہتا

[मोहना औबेदुल्ला खान आबमी]

ہوں کہ یہ زبانیں ہمیشہ ہمارے ملک کی شان آن۔ بان رہی ہیں۔ ہمارے ملک کی وراثت کے ساتھ ہمارے ملک کی تہذیب و تمدن کے ساتھ ان زبانوں کا سیدھا رشتہ ہے۔ اس لئے ان زبانوں کو یونین پیبلک سروس کمیشن کی زانہا میں کے خلاف پھر سے وہ درجہ ملنا چاہیے جس کے ذریعہ مسلم بچے سول سروس کمیشن کے امتحانات میں بیٹھتے تھے۔ ساتھ ساتھ ایک بات اور عرض کروں گا۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTBY RAZI) : Please try to conclude. There are two or three Members who want to associate with your special mention. Kindly bear their interest also in your mind.

مولانا عبید خاں اعظمی، مالکل آخری بات کہنا چاہتا ہوں۔ ایک سیکنڈ کا موقع اور چاہتا ہوں سر۔ میں کہنا یہ چاہتا ہوں کہ ہر طرف ہی یہ تماشہ ہو چکا ہے ملک سے عربی کو ختم کر دے برٹش کو ختم کر دے اس ہاؤس میں درجن سے زیادہ لوگ اردو میں تقریریں کرتے ہیں بسکند رخت صاحب کی بھی زبان نہایت شاندار اور ہمیشہ اردو معلیٰ کو وہ استعمال کرتے ہیں اس ہاؤس میں پی شو شنگو صاحب کے ذریعے سر۔ آپ بھی ہے ہوں گے دیگر ممبران پارلیمنٹ کے ذریعے ہم نے اپنے سابق چیئرمین کے سامنے بھی اردو کا

مسئلہ رکھا تھا کہ ایک مترجم دے دیا جائے مگر آج تک یہ۔۔۔

آپ بھادھیکش: یہ اردو کا مسئلہ نہیں ہے

مولانا عبید خاں اعظمی: بہیں۔ میں کہنا یہ چاہتا ہوں کہ جہاں جہاں بھی ہمارے حقوق ہیں۔ وہاں وہاں سے ان کو نکالا جا رہا ہے۔ آخر یہ دھاندلی کب تک چلتی رہے گی۔ میں اس دھاندلی کی زبردست مذمت کرتے ہوئے عربی پرشین اور پالی زبانوں کو پھر سے ان کی بحالی کی مانگ کرتا ہوں تاکہ ملک میں مسلمانوں میں اور انصاف پسند انسانوں میں پھیلی ہوئی بھیجی کا خاتمہ ہو سکے۔ بڑی بھاری معیبت تو ہے یہ ہے:-
نہیں منت کش تا بہ شنیدن داستان میری خاموشی گفتگو ہے۔ یہ زبانی ہے زبان میری یہ دستور زبان بندی ہے کیا تیری محفل میں یہاں تو بات کرنے کو ترستی ہے زبان میری اڑاٹے کچھ درق لالہ نے کچھ گل جن نے کچھ گل نے جن میں ہر طرف بکھری ہوئی ہے داستان میری "ختم شد"

16.00 P. M]

THE VICE CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI) : If the House agrees, we can extend the sitting for another five minutes on!; Otherwise, we do not invc the time.

SOME HON. MEMBERS : Yes, we can sit for five minutes more.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI) : I request all the hon. Members who want to associate themselves with the special mention to conclude within five minutes.

श्री मोम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : सर, मेरा कहना यह है कि यह बाकायदा एक साजिश है। इसलिए मैं यह बताना चाहता हूँ जैसा कि सतीश चन्दा कमीशन की रिपोर्ट में इसके अन्दर इन तीनों जुवानों के नाम नहीं दिए गए हैं लेकिन इसमें शामिल कर लिया गया है, उसकी वजह खास तौर से क्या है ? यह तीनों जुवाने स्कोरिंग मार्क्स देती हैं। अगर सबजेक्ट में लें तो इसके अन्दर काफी अच्छे मार्क्स हो जाते हैं। और इसके जरिए से लोग सर्विस में आ जाते हैं। मौलाना साहब ने बहुत बजाहत से कह दिया, मैं उसको दोहराना नहीं चाहता। लेकिन इन जुवानों को इससे निकालकर बाकायदा यह साजिश की गई है कि एक मखसूस कम्युनिटी के लोग जो इन जुवानों को जरा ज्यादा पढ़ते हैं वह लोग सर्विस में न आएँ। यह एक साजिश है और मैं मतालवा करता हूँ कि इसकी तहकीक करें और इन जुवानों को इसके अंदर वापिस लेकर आएँ और इसके अन्दर इज्जियारी मजामिन की इजाजत दी जाए।

شری محمد افضل عرف م۔ افضل :
سر میرا کہنا یہ ہے کہ یہ باقاعدہ ایک
سازش ہے۔ اس لئے میں یہ بتانا چاہتا
ہوں جیسا کہ ستیش چندرا کمیشن کی
رپورٹ میں اس کے اندر ان تینوں
زبانوں کے نام نہیں دیئے گئے ہیں۔
لیکن اس میں متبادل کر لیا گیا ہے۔
اس کی وجہ خاص طور سے کیا ہے۔ یہ
تینوں زبانیں اسکوڑنگ مارکس دیتی
ہیں۔ اگر سبجیکٹ میں لیں تو اس سے
اندر کافی اچھے مارکس ہو جاتے ہیں اور
اس کے ذریعے لوگ سروسز میں آجاتے
ہیں۔ مولانا صاحب نے بہت وضاحت
سے کہہ دیا ہے۔ میں اس کو دہرائی نہیں
چاہتا۔ لیکن ان زبانوں کو اس سے نکال
کر باقاعدہ یہ سازش کی گئی ہے کہ ایک
مخصوص کمیونٹی کے لوگ جو ان زبانوں
کو ذرا زیادہ پڑھتے ہیں۔ وہ لوگ سروسز
میں نہ آئیں۔ یہ ایک سازش ہے اور
میں مطالبہ کرتا ہوں کہ اس کی تحقیق کریں
اور ان زبانوں کو اس کے اندر واپس لے کر
آئیں اور اس کے اندر اختیاری مضامین
کی اجازت دی جائے۔

श्री एकोक आलम (बिहार) : यह अफसोस और सदमा की बात है कि हमारे अपने ही मुल्क में हमारे लोग कुछ ऐसा काम कर जाते हैं जिससे हम लोगों का सर शर्म से झुक जाता है। यह जुवानें चाहे परशियन हो या अरबी हो या पाली हो उनका पंडित जवाहर लाल नेहरू के टाईम में एडीशन हुआ था, यह नहीं कि आज या कल हुआ है। इतने दिनों से यह जुवानें यूनिजन पब्लिक सर्विस कमीशन में थी और आज जो लोग मुताअस्सिब हैं वे चाहते हैं कि मुसलमानों को, मैक्लीयरली कहना चाहता हूँ कि वे मुसलमानों को किस तरह से नौकरी से निकाला जाए, वे यूनिजन पब्लिक सर्विस कमीशन में न आए, किसी सूत से आई० ए० एस०, आई० पी० एस० से इनको अलहदा रखा जाए। यह बहुत साजिश के तहत काम हो रहा है। इसलिए मैं हुकूमत से आपके जरिए यह मांग करता हूँ कि परशियन, अरबी और पाली यह हमारी तीनों जुवानें हैं, तीनों को रिस्टोर किया जाए और जखम पर ज्यादा नमक न छिड़की जाए।

श्री रफीक़ عالم : یہ افسوس اور حسرت کی بات ہے کہ ہمارے اپنے ہی ملک میں ہمارے لوگ کچھ ایسا کام کر رہے ہیں جس سے ہم لوگوں کا سر شرم سے جھک جاتا ہے۔ یہ زبانیں چاہے پارسی ہوں یا پالی اور ان کا پندت نے ہرگز کچھ ایسا نہیں کیا تھا۔ یہ نہیں کہ آج پالی ہوا ہے۔ آئندہ لوگوں سے یہ راہنیں یونین پبلک سروس کمیشن میں تھیں اور آج جو لوگ متعصب ہیں وہ چاہتے ہیں کہ مسلمانوں کو میں کچھ کی کہنا چاہتا ہوں کہ مسلمانوں کو کس طرح سے نوکری سے نکالا جائے۔ وہ یونین پبلک سروس کمیشن میں نہ آئیں کسی صورت سے آئی۔ اسے اس آئی پی ایس سے انکو علیحدہ رکھا جائے۔ یہ بہت سازش کے تحت کام ہو رہا ہے۔ اس لئے میں حکومت سے کہتا ہوں کہ یہ مانگ کر رہیں کہ پشیمانی اور پالی یہ ہماری تینوں زبانیں ہیں۔ تینوں کو رستور کیا جائے اور زخم پر زیادہ نمک نہ چھڑکی جائے۔

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : (आन्ध्र प्रदेश) : भोलाना आजमी ने जो स्पेशल मेंशन किया है, मैं उसकी भरपूर ताईद करता हूँ और हुकूमते हिन्द से मुतालिबा करता हूँ कि जो परशियन, अरबी और पाली हिन्दुस्तान की इंतहाई जुवाने हैं और ताज्जुब तो इस बात का है कि हमारी अहम

जुबानों को किस तरह से यू० पी० एस० सी० ने खारिज किया है। मैं आपके तत्समुत् से हुक्मते हिन्द से यह मुतालिबा करता हूँ कि फौरी यह अपने अहकामात अगर हैं तो वापिस लें और इन जुबानों को बहाल करें।

شری محمد خلیل الرحمن، مولانا اعظمی
نے جو اسپیشل مینشن کیا ہے میں اس کی
بھر پور تائید کرتا ہوں اور حکومت ہند
سے مطالبہ کرتا ہوں کہ جو پریشین عربی اور
پالی ہندوستان کی انتہائی زبانیں ہیں اور
تعجب تو اس بات کا ہے کہ بھاری اہم
زبانوں کو کس طرح سے یو۔ پی۔ ایس۔ سی
نے خارج کیا ہے۔ میں اپنے تو بیڑ سے
حکومت ہند سے مطالبہ کرتا ہوں کہ فوری وہ
اپنے احکامات اگر ہیں تو واپس لیں
اور ان زبانوں کو بحال کریں۔

प्रो० आई० जा० समबो (कर्नाटक) :
उपसभाध्यक्ष महोदय, परशियन, अरबी
और पाली जुबानों के साथ जो सौतेली
माँ का व्यवहार हो रहा है, यह सहा नहीं
जाता है। भाषा जो होती है वह निस्स एक
समाज की धरोहर नहीं है यह पूरा दुनियाँ
की है। इसलिए सच्ची भाषाएं, अच्छी
भाषाएं जो क्लासिकल भाषाएं कहलाती हैं
इन तीनों भाषाओं के जजबात वे भी यहां
पर पेश की हैं, मैं उनसे सम्बद्ध करते हुए
अपने विचार प्रगट करता हूँ।

श्री चौहानन्द प्रसीन (पश्चिमी बंगाल) :
पूरे हाउस के जजबात एक ही रहे हैं। मेरा
मुतालिबा यह है कि हुक्मत इसकी छानबीन

करे कि किन लोगों ने इसको काटा है।
वह साजिश है। कर्मटी की जो सिफारिश
है वह चार जुबानों के मुतालिब है, तीन
जुबानों को इसमें खत्म कर दिया गया।
इसलिए मौलाना ने जो कुछ कहा मैं पूरी
तरह से एसोशिएट करता हूँ।

شری محمد امین: پورے ہاؤس کے
جذبات ایک ہی رہے ہیں میرا مطالبہ یہ
ہے کہ حکومت اس کی چھان بین کرے کہ
کن لوگوں نے اس کو کاٹا ہے۔ یہ سازش
ہے۔ کمیٹی کی جو سفارش ہے وہ چار زبانوں
سے متعلق ہے۔ تین زبانوں کو اس میں
ختم کر دیا گیا۔ اس لئے مولانا نے جو کچھ
کہا میں پوری طرح سے ایسوسی ایٹ
کرتا ہوں۔

श्री एस० एस० अहलुवालिया : (बिहार)
"मौलाना साहब ने जो मसला उठाया है,
"मैं उससे पूरी तरह से सहमत हूँ और उनके
समर्थन में सरकार से यह मांग करता हूँ
कि परशियन, अरबी और पाली भाषा को
जो यू० पी० एस० सी० के कोर्स से निकाली
गई है, यह सरासर एक अन्याय है और
यह वाकई खोजबीन करने की जरूरत है
कि किन हालातों में यह पहले तो इंकलुड
क्यों की गई और इंकलुड करने के पीछे
क्या कोई कारण था और जब इंकलुड
की गई तो आज निकालने के पीछे क्या
कारण है? वह खोजबीन करने की जरूरत
है तथा जो लोग इसमें हैं उन पर सख्त
से सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है।

[श्री एस० एस० अहलुवालिया]

और सिर्फ यही नहीं स्टेट्स के प्रति, पी० ए० सी०, कारपोरेशन हर जगह वहाँ पर वहाँ की भाषाओं के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, जिस तरह बिहार में मैथिली भाषा को निकाश दिया गया। तो इस तरह से इस पर गौर करने की जरूरत है और सरकार को खुले दिल से इसमें खोजबीन करने की जरूरत है।

डा० फागुनी राम (बिहार) :

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं भी चाहता हूँ कि आजमी साहब ने जो प्रस्ताव किया है, जो मेशन किया है उससे हम पूरी तरह से सहमत हैं और उनके साथ मैं अपने को सम्बद्ध करना चाहता हूँ। क्योंकि इतिहास बड़ा गौरवपूर्ण रहा है और धार्मिक लोगों का, धार्मिक ग्रंथों का उनके सेंट्रिमेंट्स भी इसके साथ जुड़े हुए हैं और इसको पाने वाले लोग भी इसके साथ जुड़े हुए हैं। इसलिए अरबी, फारसी और पाली भाषा को यू० पी० पब्लिक सर्विस कमीशन में जनकल्याण के लिए और देश की एकता और अखंडता के लिए शामिल किया जाए, इस बारे में मैं पूर्णतया उनके साथ अपने को सम्बद्ध करता हूँ।

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry) : I associate myself with the sentiments expressed by Maulana Obaidullah Khan Azmi Saheb. Arabic language is a common language and it is being learnt by students in various schools and colleges in this country. Now if an option is given to the candidates & I answering their question papers in ftafc UP.SC examination in their own

mother tongue or in the language which they learn, it will be a better experience for them and they would be able to secure good marks. I do not know the reason given by the Government for removing these languages, that is Arabic, Persian and Pali from the UPSC examination. I would submit that it will hurt the sentiments of the people, especially the minorities, who are living in this country. Many people are learning and studying Arabic, Persian and Pali languages in this country and, therefore, removal of these languages from being used in the UPSC examination is totally unwarranted. I support Azmi Saheb on this count.

SHRI SUNIL BASU RAY (West Bengal) : Sir, I also associate myself with the sentiments expressed by Azmi Saheb-

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद सिद्दी रबी) :

भाषाएं और जुबानें हमारी मिलीजुली संस्कृति की गमाखी करती हैं, तर्जुमानी करती हैं। ऑनरेबल मेंबरान ने जिन खज़्बात का इजहार किया है, मैं भी उससे अपने को एसोसिएट करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि सरकार इस बात की छानबीन करेगी कि किन-किन हालात में और किस वजह से इन तीनों बहुत ही दीलतमंद जुबानों को, अरबी, फारसी और पाली, इनको किस तरह से यूनिफन पब्लिक सर्विस कमीशन के इम्तहानात से निकाल दिया गया।

اپنے سچا اوصیکش (شری سید
 سبط رضی): بھاشائیں اور زبانیں بھاری
 ملی جلی سنسکرتی کی غمازی کرتی ہیں۔
 ترجمانی کرتی ہیں۔ آری بیل ممبران نے جن
 جذبات کا اظہار کیا ہے۔ میں بھی اس سے
 اپنے کو ایسوسی ایٹ کرتا ہوں اور امید
 کرتا ہوں کہ سرکار اس بات کی چھان بین
 کرے گی کہ کن کن حالات میں اور کس
 وجہ سے ان تینوں بہت ہی دولت مند
 زبانوں کو۔ عربی۔ فارسی اور پالی ان کو کس
 طرح سے یو پی پبلک سروس کمیشن کے
 امتحانات سے نکال دیا گیا۔

The House stands adjourned till 11.00
 A.M. on Thursday.

The House then adjourned at eight
 minutes past six of the clock till
 eleven of the clock on Thursday,
 the 3rd December,

†Transliteration in Arabic Script.